ISSN- 2454-2695
Volume 02 Issue 03
March 2016

साहित्य संहिता
Available at http://www.sahityasamhita.org/

सूरदास की भक्ति संरचना

नवीन
स्नातकोत्तर विभाग
किरोड़ीमज कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय
E-mail: naveenravit0007@gmail.com

शोध संक्षेप–

सूरदास हिंदी भक्ति काव्य के कृष्ण भक्त कवि रहे हैं भक्तिकाल में सूरदास की भक्ति संरचना केवल इस रूप में भिन्न नहीं है कि वो कृष्ण भक्ति के प्रतिनिधि कवि हैं। बल्कि इससे इत्तर सूरदास जी की भक्ति जीवन उत्सव प्रकृति की है। जिसका सार कुछ यूं है कि प्रथम, दुनिया के बाह्य प्रभाव से मुक्ति और इसके बाद स्वयं से भी मुक्ति। ये मुक्त होना बंधनों और अपेक्षित स्थितियों से संबंधित है। जिसमें रह जाता है तो केवल ईश्वर अनुग्रह।

आज के समकालीन समय में सूरदास जी की भक्ति संरचना के कुछ नए आयाम चिहिन्त किए जा सकते हैं यही इस शोध पत्र का सुक्ष्म ध्येय है।

प्रस्तावनाः–

आदिकालीन सांमती ऐहिकता के लगभग दो सौ वर्ष पश्चात पूर्व मध्यकाल में साहित्य के केंद्र में भक्ति की स्थापना होती है। उतर भारत में ये दक्षिण की आलवरों की परम्परा से प्रवेश पाती है। तमाम साहित्य इतिहासों में भक्ति रूपी इस जागरण पर विचार किया गया है। सभी विद्वानों ने पूर्वमध्यकाल में भक्ति प्रवेश को लेकर कुछ न कुछ नया जोड़ा है। पूर्व मध्यकाल में भक्ति की जड़े दक्षिणी आलवरों और बौद्ध के विकृतरूप नाथों तक फैली मिलती हैं। पूर्वमध्यकाल में भक्ति एक केंद्रीय प्रभाव है ये भक्ति समुद्र स्वरूप सी गहराई और विस्तार लिए हुए है। भक्ति के स्वरूप और उसकी संरचना में मौजूद प्रभाव के आधार पर, इसे चार भागों में वर्गीकृत करते हैं। पूर्व

ISSN- 2454-2695
Volume 02 Issue 03
March 2016

मध्यकाल की कृष्णकाव्यधारा के प्रतिनिधि कवि सूरदास थे। कृष्णभक्ति संबंधी रचनाएँ उन्होंने रची। पूर्वमध्यकाल से पूर्व भी कृष्ण को आधार बनाकर संस्कृत और अपभ्रंश में जैनों ने रचनाएं की। लेकिन हिंदी में कृष्ण भक्ति रचनाओं में सूरदास सबसे अग्रणी कवि हैं।

सूरदास जी की भक्ति संरचना का आधार श्रीमद्भागवत है। उन्होंने सूरसागर की रचना श्रीमद्भागवत' के आधार पर की। उनके द्वारा रचित हजारों पदों पर 'श्रीमद्भागवत' की छाया है। सूरदास जी वल्लभाचार्य के शिष्य थे जिनका दर्शन शुद्धाद्वैत था। सूरदास जी ने वल्लभ जी के दर्शन के संस्कार अनुरूप ही समस्त कृष्ण महिमा को ब्रजभाषा में शब्दबद्ध किया। पूर्वमध्यकाल में भक्ति जागरण के ध्वज स्वरूप सी थी। मध्यकाल की ध्वजा रूपी भक्ति में सर्वप्रथम जो रूप प्रचलित हुआ। वो निर्गुण स्वरूप भक्ति। जिसमें मानवीय आधार को मुख्य लक्ष्य कर समस्त सकीर्ण भावनाओं और समग्र संकीर्ण व्यवहारों को त्याग कर ईश्वर के निर्गुण निराकार स्वरूप की महिमा को रचा गया। इस परम्परा के सबसे प्रमुख स्तंभकार संत कबीरदास थे।

इसके पश्चात सूफियों के स्वरूप में उदारवादी मुस्लिम संतों ने प्रेम को भक्ति का जीव तत्व मानकर, ईश्वर में स्वयं को प्रेम तत्व आधार पर मिला देने की भक्ति का प्रचलन हुआ। इसमें ईश्वर के प्रति प्रेमिका स्वरूप आकर्षित होने, उसे पाने, समर्पित हो जाने का संस्कार प्रधान रहा। इस तरह मध्यकाल की प्रथम दोनों धाराएं भक्ति के निर्गुण स्वरूप को ही मानते हैं।

लेकिन सूफियों के बाद हजार वर्षों पूर्व की लोक कथाओं (रामायण और श्रीमद्भागवत) से प्रवाहित राम और कृष्ण जी की सगुण भक्ति का उदय हुआ। सगुण स्वरूप की कृष्ण जी की सगुण भक्ति का उदय हुआ। सगुण स्वरूप की कृष्ण जी पर आधारित भक्ति की रचना सूरदास ने की। अभी तक हम भक्तिकाल की भक्ति संरचना का सूक्ष्म अवलोकन कर चूके हैं। ऐसा करना इसलिए अनिवार्य था क्योंकि चितवृत्तियों पर तत्कालीन स्थितियों की छाया मौजूद रहती है। किसी कवि के तत्कालीन साम्य

ISSN- 2454-2695
Volume 02 Issue 03
March 2016

और विभेद को भी पृष्ठभूमि की पहचान करके समझा जा सकता है। वहीं सूर की भक्ति विशिष्टता को भी तभी रेखांकित करना संभव होगा।

सूरदास की भक्ति संरचना में 'श्रीमद्भागवत' और वल्लभ प्रदत्त दर्शन 'शुद्धाद्वैत' की केंद्रीय भूमिका है। जिसमें युगीन महापुरूष श्रीकृष्ण जी को आराधना प्रमुख संस्कार है। उनकी भक्ति का आधारभूत तत्व वैष्णव भावना या वैष्णव संस्कार ही हैं। लेकिन सूर जी ब्रहम स्वरूप के रहस्य में न बंधकर सहज मानवीय स्वरूप में विश्वास करते हुए, अपनी भक्ति के अनुष्ठान का प्रारंभ करते हैं सूरदास जी वैष्णव संस्कारों और ब्रहम चेतना के बीच से अपनी भक्ति को सरल जीवनोत्सव की ओर ले जाते हैं। ये उनकी भक्ति का सबसे प्राथमिक गुण है। सूरदास के पदों के अध्ययन से दूसरी स्थापित विशिष्ट बात ये है कि सूरदास जी वल्लभ द्वारा प्रकट पुष्टिमार्ग को प्रधान भावना के रूप में स्वीकार करते हैं यही कारण है कि वो कृष्ण काव्य के सर्वव्याप्त स्वरूप से कवि हैं जिन्होंने कृष्ण समग्र व्यक्तित्व को गहराई से रचा है।

सूरदास की भक्ति भावना की प्रकृति 'सख्यभाव' की है। ये 'सख्यभाव' उनके नवधा भक्ति गायन में भी मौजूद है। उनकी इस भक्तिसंरचना की विशेषता उसमें व्याप्त अनन्य भाव है। जब उपासक अपनी निष्ठा भावना से स्वयं को श्रीकृष्ण के पुनीत चरणों में लीन कर समस्त विषयवासना से मुक्त होकर भक्ति करता है तभी उस अनन्य भाव की भक्ति का श्रीगणेश होता है। सूरदास की यह अनन्यता उनके विनय और दास्य भाव के भक्ति पदों सी है। विनय के एक पद में जिस प्रकार वे ज्ञान चक्षु को नींद देते हैं ठीकी उसी प्रकार सूरसागर का एक ही पद हमें मानवीय उत्सव का आभास करा देता है। आचार्य वल्लभ ने उनकी भक्ति रूपी लहर को जैसे उफान दे दिया हो।

सूरदास की भक्ति की संरचना का दूसरा सबसे बड़ा गुण हैं– 'सीधी गढी हुई तार्किक शक्ति। वों तर्क चाहे निर्गुण भक्ति के विरोधाभास के समय, सगुण के महत्व के संबंध में दिखाई दे जाते हैं। सूरदास जी की गोपियों में उद्धव के समक्ष जो तार्किकता है वो रूचिपूर्ण और स्वीकार्य शक्ति लिए हुए है। इसी तार्किकता के बल पर सूरदास रसिक हृदय को हंसाते भी है। फंसाते भी हैं और स्वीकार करने को मजबूर भी करते

ISSN- 2454-2695
Volume 02 Issue 03
March 2016

है। तार्किकता जैसे उनके काव्य का भागवत प्रसाद सा हो गई है। सूरदास के पदों में हर विषय पात्र तर्क से व्यवहार करता है। यहां तक कृष्ण के बाल वर्णन में यशोदा को कृष्ण द्वारा कल्पित तर्क देते दिखाया है। जो कल्पित होने के बावजूद सजीव का दंभ भरते दिखते हैं मानो उन्होंने कोई चमत्कारिक संजीव शक्ति पा ली हो।

सूरदास के काव्य में जो प्रधानता है वो है श्रृंगार की। उन्होंने श्रृंगार की दोनों रूपों संयोग और वियोग को बड़ी गहराई से चित्रमयी शब्दों से वर्णित किया है। इसी में उनके रूप वर्णन की शक्ति भी है। सहज, स्वाभाविक उपमा उनके इस वर्णन को भ्रमित नहीं होने देती। उसमें विश्वसनीयता बनाएं रखती हैं। उन्होंने नेत्रों की सुंदरता में गोपियों और कृष्ण के वर्णन में अपनी भावनात्मक गहराई का परिचय दिया है। इसमें उनकी प्रतिबिंब शैली का कोई सानी नहीं। इसी रूप वर्णन के बीच मौजूद प्रेम के प्रणय की चित्कार को शुक्ल जी जीवन महोत्सव के रूप में लेते हैं।

सूरदास अपने समकालीन सभी भक्त कवियों को श्रृंगार वर्णन की समष्टि विशेषता में कहीं ठहरने नहीं देतें। सूरदास जी का श्रृंगार केवल गहराई ही नहीं बल्कि जमीनी स्वभाविकता, सरलता, सर्वसुगमता भी लिए है। यही कारण है कि उनके श्रृंगार व्यवहार सभी को अपने से, अपने पर बीते हुए से जान पड़ते है। एक श्रेष्ठ श्रृंगार कवि के रूप में यही उनकी बड़ी उपलब्धि है। सूरदास की भक्ति संरचना को रससिक्त कर देने में सबसे अधिक भूमिका वात्सल्य संस्कार की है। सूरदास जी के पदों में वर्णित वात्सल्य उनके स्वभाव का वात्सल्य है। जो केवल ईश्वर पदत्त अशेष है। उन्होंने वात्सल्य को मौन से चपलता तक, चंचलता तक व्यक्त किया है। जिसमें सर्वव्याप्तता का गुण है। पाठकों के लिए ईश्वरबोध भी है। सूर का वात्सल्य राग विवेक की अनुभूति कराता है। सूरदास ने कृष्ण वात्सल्य के मार्मिक दृश्यों में ममत्व शक्ति यशोदा की भी मौजूदगी है। कृष्ण और यशोदा के वात्सल्य दृश्य पलना झुलाने से लेकर, नाराज होने तक के दृश्य है। यानि प्यार भी है दूलार भी है वहीं रूठने का आनंद भी। प्रेम के केंद्र में रूठना किस तरह आनंद मे तब्दील हो जाता है। यें सूरदास जी ने भलीभांति सिद्ध कर दिया है। वो भी अपनी चित्रमयी शैली से।

ISSN- 2454-2695
Volume 02 Issue 03
March 2016

सूरदास के काव्य में मौजूद वात्सल्य संरचना को परखने के पश्चात कहा जा सकता है कि सूर की वात्सल्य शक्ति पाश्चात्य मनोवैज्ञानिकों को पीछे ही नहीं छोड़ती, अपितु बहुत कुछ सीखाने का साहस रखती है। सूरदास जी के सभी श्रृंगार, वात्सल्य वर्णन पाठक को वैयक्तिक रसानुभूति के स्थान पर समष्ठि रसानुभूति कराते हैं। सूर वर्णन में कृष्ण भी हैं, यशोदा भी हैं वहीं गाकुल भी गाय के रूप में, गोपियों के रूप में मौजूद रहता है। इस तरह सूर व्यक्ति उत्सव के स्थान पर मानव उत्सव दर्शन सिद्ध कवि हैं। जिसमें अनुग्रह भी है, समर्पण भी है और आनंद सिद्धि भी।

सूरदास जी जब कृष्ण के मथुरा चले जाने के बाद के गोपियों के विरह को पदों में रचते हैं तो उन पदों में' केवल गोपियों का ताप ही नहीं, बल्कि समस्त गोकुल प्रकृति का ताप वर्णन करते है। जिससे समग्रता का आनंद फूट पड़ता है। सूरदास जी ने ज्ञान के स्थान पर प्रेम के आनंद को जीने का माध्यम बनाने का उपदेश दिया है। भ्रमरगीत में केवल ऊपरी बातों पर ही नहीं बल्कि व्यक्तिगत जीवन के दर्शन को भी आईना दिखाया है।

निष्कर्ष–

सूरदास की भक्ति स्वरूप की संरचना के सम्मिलित मेरूदण्ड श्रृंगार और वात्सल्य हैं। असल में ये जीवन के केंद्रीय स्तम्भ भाव है जिनके सिवाय जीवन में आनंद की धारा नहीं बह सकती। वो 'भागवत' स्वरूप में मानव को इन्हीं दो से व्यवहार करने, जीवन जीने तक के दर्शन का बोध करा देते हैं। सूर की भक्ति के इन दोनों आधारों को जिस रूप में रचा है वो एक प्रेरक माध्यम सा है। यानि 'सूरसागर' वर्णित भक्ति संरचना समस्त मानव के असीम आत्मविश्वास को बहाल करने में पूर्णतया सक्ष्म है। सूर ने भक्ति संरचना के श्रेष्ठ दर्शन कराएं है।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची–

1. हिंदी साहित्य का इतिहास, रामचंद्र शुक्ल, प्रकाशन संस्थान, नई दिल्ली
2. भक्ति आंदोलन और भक्तिकाव्य, शिवकुमार मिश्र
3. भक्ति आंदोलन और लोकसंस्कृति, अभिव्यक्ति प्रकाशन, शिवकुमार मिश्र, इलाहाबाद, 2005
4. सूर साहित्य, हजारी प्रसाद द्विवेदी
5. भक्तिकाल का समाजदर्शन, प्रेमशंकर, वाणी प्रकाशन, दिल्ली, 2002